वर्ष - ०१ | अंक - नौ | जून , २०२५

वर्धा डायरी

(मासिक ई - पत्रिका)

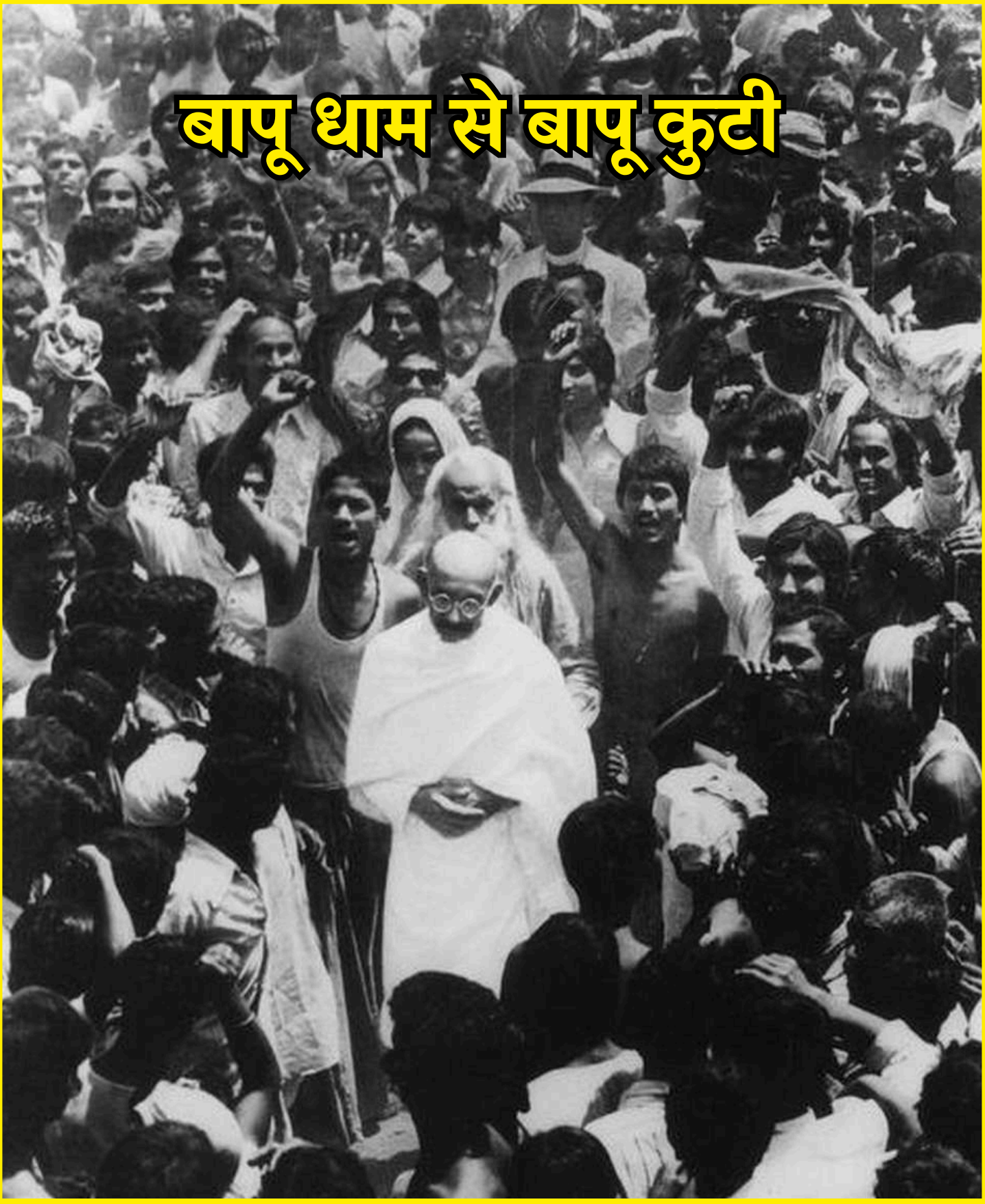

बापू धाम से बापू कुटी

संपादन - विवेक रंजन सिंह , अभय दुबे

सह - संपादन - प्रियांशु कुमार

इस अंक में विशेष - ग्राम स्वराज का जादुई काढ़ा - सोपान जोशी | कविताएँ - श्रद्धा सुनील , वर्षा सिंह , मोहम्मद हुसैन , जेनिल शेख़ | कहानी - देवेन्द्र मिश्र , के. पी. रावत | व्यंग्य - खुशाल सिंह | आवरण कथा - अंकिता पटेल | जन-संपादकीय - आलोक चतुर्वेदी |

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों का उपक्रम

वर्ष - ०१ | अंक - नौ | जून , २०२५

वर्धा डायरी

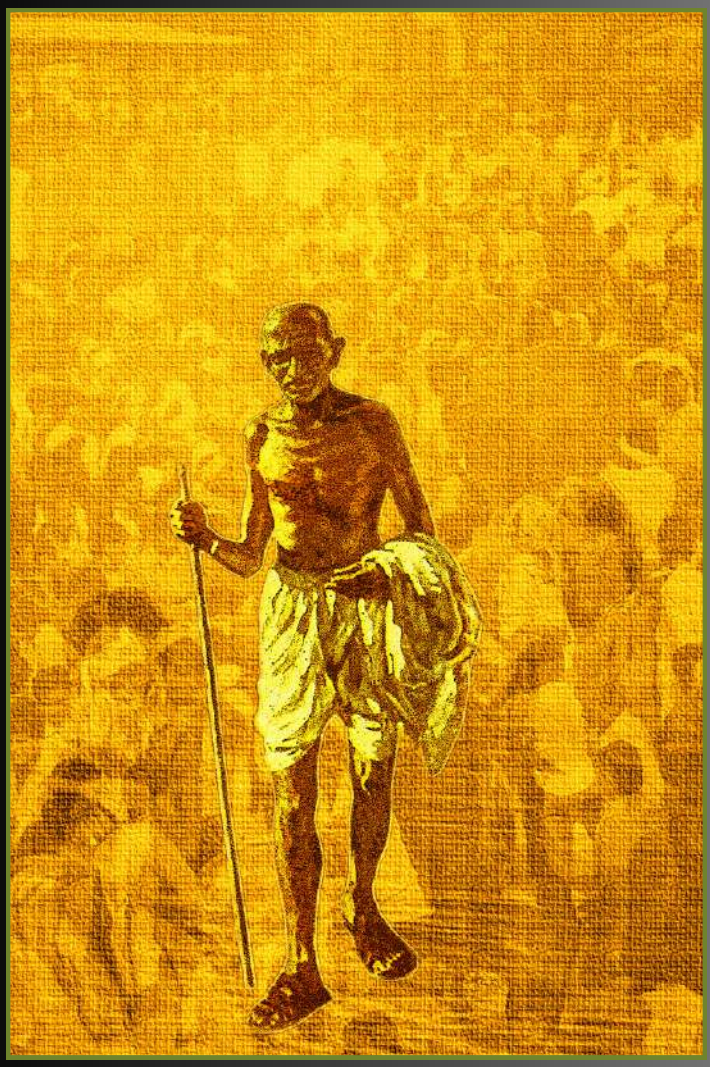

(छायाचित्र - बंशीलाल परमार , मंदसौर , मध्य प्रदेश)

बापू के विचार

- आजादी का कोई अर्थ नहीं है यदि इसमें गलतियां करने की आजादी शामिल न हों।
- धैर्य का छोटा हिस्सा भी एक टन उपदेश से बेहतर है।
- हम जो करते हैं और हम जो कर सकते हैं, इसके बीच का अंतर दुनिया की ज्यादातर समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त होगा.
- किसी देश की महानता और उसकी नैतिक उन्नति का अंदाजा हम वहां जानवरों के साथ होने वाले व्यवहार से लगा सकते हैं.
- आप जो करते हैं वह नगण्य होगा. लेकिन आपके लिए वह करना बहुत अहम है.
- ईश्वर का कोई धर्म नहीं होता, बल्कि सच्चाई ही ईश्वर है.
- अगर आपको कोई बुरा करे तो बदले में उसे प्रेम दें, यही जीवन की सच्ची सीख है.
- आप जो बदलाव दुनिया में देखना चाहते हैं, पहले खुद में लाएं.
- व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित होता है, जैसा वह सोचता है, वैसा ही बन जाता है.
- पहले वो आपको अनदेखा करेंगे, फिर आप पर हंसेंगे, फिर आपसे लड़ेंगे, और तब आप जीत जाएंगे।
- जियो ऐसे जैसे कल मरना है, सीखो ऐसे जैसे हमेशा जिंदा रहना है।
- खुशी तब मिलेगी, जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं, और जो करते हैं, उसमें सामंजस्य हो।
- विश्वास को हमेशा तर्क से तौलना चाहिए। जब विश्वास अंधा हो जाता है, तो वह मर जाता है।
- भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम वर्तमान में क्या करते हैं।

वर्ष - ०१ | अंक - नौ | जून , २०२५

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(पूर्ण रुप से विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका)

वर्धा डायरी
(मासिक ई - पत्रिका)

दो शब्द

'वर्धा डायरी' ई-पत्रिका महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह पत्रिका पूर्ण रुप से एक खुला मंच है, जहां आप अपने रचनात्मक विचारों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका को शुरु करने का उद्देश्य यही है कि हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों के भीतर छिपी रचनाधर्मिता को जागृत कर, उन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया जाए। हिंदी विश्वविद्यालय अपने जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित किया गया था, उसको पूरा करने में हमारा एक छोटा सा योगदान है। हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाओं से एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने में हमारी मदद करें। हमारा आपसे आग्रह है कि आप अपनी जिन भी रचनाओं को भेजें वो आपकी मूल हों । पत्रिका को हम सिर्फ़ विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित न करके, सभी लेखकों के लिए खोल रहे हैं। आइये महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम की कड़ी का एक हिस्सा बन इस उपक्रम को आगे बढायें। इसी आशा के साथ आपकी रचनाओं का स्वागत है ।

महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा से प्रकाशित
साहित्यिक - सांस्कृतिक मासिक ई - पत्रिका

वर्धा डायरी

प्रकाशक/ प्रधान संपादक
विवेक रंजन सिंह

उप - प्रधान संपादक
अभय दुबे

संपादक
गोविन्द कुमार

सह - संपादक
राहुल कुमार
प्रियांशु कुमार
हर्ष आनंद
शिया गोस्वामी
रागिनी

तकनीकी मार्गदर्शक
राखी (पी.एच.डी.)

परामर्श मंडल
डॉ. धीरेन्द्र प्रताप सिंह 'धवल'
लाल बहादुर यादव (अधिवक्ता)

प्रिय पाठक मित्रों ,
पत्रिका का यह प्रकाशन पूर्ण रूप से विद्यार्थियों द्वारा ही किया जाता है . इस प्रकाशन के पीछे हमारा मात्र यही प्रयास है कि आपके विचारों को एक मंच दिया जा सके . हम आपसे सहयोग की अपेक्षा रखते हैं . आप हमें आर्थिक सहयोग भी कर सकते हैं. आर्थिक सहयोग हेतु नीचे दिए गये UPI पर आप राशि भेज सकते हैं . आपका लघु सहयोग हमारे प्रयास को नई उर्जा प्रदान करेगा .

UPI आई .डी . - 9140586154@axl (गूगल पे / फ़ोन पे)

पत्रिका के सभी अंक नॉट नल पर उपलब्ध हैं . अब तक प्रकाशित सभी अंकों को पढने के लिए विजिट करें www.notnul.com

पत्रिका का पी.डी.एफ. प्राप्त करने के लिए आप दिए गए बार कोड या यू.पी.आई. पर राशि भेज सकते हैं . आप हमारे सदस्य भी बन सकते हैं , जिससे आपको समय समय पर प्रकाशित अंक उपलब्ध कराए जा सकें .

सदस्यता शुल्क : (संस्थान , शिक्षक , शोधार्थी)
मासिक - तीस रुपये मात्र
वार्षिक - तीन सौ रुपये मात्र
सदस्यता शुल्क : (विद्यार्थी)
मासिक - दस रुपये मात्र
वार्षिक - सौ रुपया मात्र

Vivek Ranjan Singh

(लेखकों को पत्रिका के अंक मुफ्त में उपलब्ध करवाए जायेंगे .)

संपादकीय संपर्क
संपादक - वर्धा डायरी
राजगुरु छात्रावास , कक्ष संख्या - 28
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,
वर्धा 442001 (महाराष्ट्र)
ई-मेल - wardhadiary@gmail.com
अंतिम पृष्ठ आवरण चित्र - प्रियांशु कुमार
पृष्ठ सज्जा - अभय दुबे , विवेक रंजन सिंह
© प्रकाशकाधीन
• संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक व अव्यवसायिक
प्रारंभ वर्ष - सितंबर , 2024
मुद्रक - स्व - प्रकाशित ई - पत्रिका

(प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली सामग्री अथवा रचनाओं के प्रकाशन हेतु संपादक का निर्णय ही मान्य होगा। प्रकाशित रचनाओं की रीति - नीति या विचारों से संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकाशक की पूर्ण जिम्मेदारी होगी।)

सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक / प्रकाशक

(पत्रिका पूर्ण रूप से अभी ई - पत्रिका है और इसके प्रिंट करने या उसके वितरण की इजाज़त अभी नहीं है। किसी विशेष स्थिति में प्रकाशक के अनुमति से ही इसके प्रिंट निकलवाए जा सकते हैं। यदि बिना प्रकाशक की अनुमति से कोई इसके प्रिंट को निकलवाता है और उसका वितरण करता है तो कानूनी कार्यवाई हेतु वह स्वयं ज़िम्मेदार होगा। प्रेस व रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अनुसार जब इसका आई.एस.एस.एन./ आर.एन.आई. अंक प्राप्त हो जायेगा, तभी इसे प्रिंट माध्यम में वितरण किया जा सकता है।
किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र वर्धा , महाराष्ट्र होगा।)

बिना प्रकाशक की अनुमति के किसी भी लेख अथवा सामग्री का प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन / प्रसारण प्रतिबंधित है ।

वर्ष - ०१ | अंक - नौ | जून , २०२५

वर्धा डायरी

मासिक ई - पत्रिका

दुनिया में अभी तक जितना लिख दिया गया उतना हमारे लिए पर्याप्त नहीं होना चाहिए। हम पढ़ पा रहे हैं इसका मतलब है हमसे पहले किसी ने लिखा है। हमें भी इसलिए लिखना पड़ेगा कि भावी पीढ़ियाँ यह जान पायें कि हमारा दौर कैसा था। लिखने से सिर्फ़ हम ज़िंदा नहीं रहते बल्कि हमारे साथ ज़िंदा रहता है हमारा समय और समाज।

विवेक रंजन सिंह

अनुक्रमणिका

1. **अपनी बात** / रचनात्मकता यहाँ की आबोहवा में बसी है ... / विवेक रंजन सिंह / **9**
2. **संपादकीय** / जलवायु परिवर्तन को अनदेखा करना , एक भीषण प्रलय को न्यौता देना है / अभय दुबे / **11**
3. **अंक विशेष** / ग्राम स्वराज्य का जादुई काढ़ा / सोपान जोशी / **13**
4. **विचार** / कब होगी गांधी के राम की वापसी / सुसंस्कृति परिहार / **20**
5. **आवरण कथा** / मेरी यात्रा: बापूधाम मोतिहारी से बापूकुटी सेवाग्राम तक / अंकिता पटेल / **21**
6. **जन - संपादकीय** / गांधी मजबूरी नहीं , मजबूती का नाम / आलोक चतुर्वेदी / **27**
7. **व्यंग्य** / कब, कहां, क्यों, कैसे / डॉ. मुकेश असीमित / **29**
8. **विचार** / गांधी के मार्ग पर दो कदम : मेरी शैक्षणिक यात्रा / अमन कुमार / **31**
9. **विचार** / महात्मा गांधी के सपनों का भारत और वर्तमान परिदृश्य / प्रियांशु कुमार / **33**
10. **संस्मरण** / प्रयागराज का बैंक रोड चौराहा / रोहन मिश्रा / **35**
11. **विचार** / गांधी जी और कुटीर उद्योग : आत्मनिर्भर भारत की नींव / रागिनी / **37**
12. **कविता** / स्त्री / के. पी. रावत / **38**
13. **विचार** / महात्मा गांधी : भारत के स्वतंत्रता के महान नायक / कृतिका / **39**
14. **कविता** / क़लम तुम न होते तो , धर्म की नींव / सुशील कुमार सिंह / **40**
15. **विमर्श** / डॉ. बी. आर. आंबेडकर : एक राष्ट्र निर्माता, किसी एक वर्ग के नहीं / विश्वास सिंह / **42**
16. **कविता** / देवेंद्र कुमार मिश्रा की कविताएं / **44**
17. **विचार** / गांधी की यात्रा : आंदोलन से आश्रम तक / सुब्रत / **48**
18. **विचार** / गांधी जी के विचारों में गांव किसान / शिया गोस्वामी / **49**
19. **विचार** / यात्रा एक स्थानांतरण नहीं , बल्कि एक विचार - यात्रा है / आरती मोहित शर्मा / **51**
20. **कहानी** / देवेंद्र कुमार मिश्रा की लघु कथाएं / **52**
21. **विचार** / महात्मा गांधी : एक महानायक की छवि और उसके पीछे के सवाल / शशांक शुक्ल / **54**
22. **कहानी** / सुधा का जीवन / के. पी. रावत / **57**
23. **कविता** / प्रेम / वर्षा सिंह / **58**
24. **विचार** / जब विश्वविद्यालयों में गांधी की ज़रुरत महसूस होती है / अजीत कुमार / **59**
25. **कविता** / कविता नारी पर जुल्म / जेनिल शेख / **60**
26. **विचार** / महात्मा गांधी का पहला सफल आंदोलन चंपारण सत्याग्रह / मुस्कान कुमारी / **61**
27. **कविता** / श्रद्धा सुनील की कविताएं / **62**
28. **विविध** / मां के हाथों का स्वाद / हर्ष आनंद / **64**
29. **कविता** / मैं जैसा हूं / ब्रज मोहन / **65**
30. **कविता** / सखी केहवत है सखी से / मोहम्मद हुसैन / **66**
31. **व्यंग्य** / एक कॉमरेड की डायरी / खुशाल सिंह / **68**
32. **विविध** / पंत की भूमि, गांधी की धरोहर : कौसानी / अजय पोद्दार 'अनमोल' / **77**
33. **संस्मरण** / एंबुलेंस से बापू कुटिया का सफर / अमल कुमार मिश्रा / **78**
34. **विविध** / सेवाग्राम: गांधीजी का कर्मस्थल और शांतिपूर्ण विचारधारा का जीवंत केंद्र / राहुल कुमार / **79**
35. **कविता** / सफाई / विश्वास सिंह | मिलन और अज्ञात प्रीतम / ओंकार नरेश बुढ़े / **80**
36. **आलोचना** / आम्बेडकरवाद में ब्राह्मणवाद का आगमन / राकेश अहिरवार / **81**

शुभ - संदेश

पत्रिका का प्रकाशन अच्छा कार्य है ।मै आप सभी (सम्पादन मंडल) को शुभकामनाएं ही दे सकता हूँ । यह अच्छा कार्य है । मैं यही चाहता हूँ कि पत्रिका के सामने राष्ट्रीय व विश्व दोनों परिप्रेक्ष्य होने चाहिए , तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी । वर्धा मेरे जीवन की खूबसूरत यादों की जगह रही है । मुझे गांधी की इस धरती से काफी प्रेम और सहयोग मिला । वर्धा सीखने , समझने और अनुसंधान करने की जगह है । रचनात्मक क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए जनसंचार विभाग के छात्रों को आगे आना चाहिए । इस पत्रिका के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकानाएं ।

श्री जी . गोपीनाथन **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी समाज की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के छात्र भाषा और साहित्य दोनों के क्षेत्र मे सक्रिय रहे हैँ। यह खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय परिसर से एक ई पत्रिका (वर्धा डायरी)की शुरुआत होने जा रही है। पत्रिका से जुड़े छात्रों को इसके लिये बधाई और मेरी शुभकामनायें।

श्री विभूति नारायण राय **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**

प्रकाश और अंधकार का युग्म एक सतत और अनिवार्य संघर्ष की याद दिलाता है । भाषा प्रकाश का ही एक रुप है जिससे दुनिया अर्थवान हो उठती है और उसे भी अंधकार का प्रतिरोध करना पड़ता है । पर भाषा की शक्ति प्रकाश से थोड़ा आगे बढ़ती है क्योंकि वह वर्तमान से आगे बढ़ कर भविष्य रचती रचाती चलती है । भाषा के गर्भ में पलती रचनाशीलता युग का निर्माण करती है । हमारी शुभकामना है कि " वर्धा डायरी " काल की संवेदना को थामे भाषा के सामर्थ्य की वाहिका बने । लोक तंत्र की प्राण नाड़ी है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डायरी उसे जीवित करने का उद्यम कर रही है । स्वराज की भूमि वर्धा से आरंभ हो रही विचारों के स्वराज की यह यात्रा मंगलमय हो ।

श्री गिरीश्वर मिश्र **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**